बच्चे विद्यालय की संस्कृति अपना लेते हैं

विजयाश्री पी एस

यह अनुभव उन विद्यालयों में से एक का है जिनमें मैंने अपनी फेलोशिप के दौरान काम किया था।

एक क्लस्टर-स्तरीय मेले की योजना बनाई जा रही थी। एक फेलो के रूप में हमें कई विद्यालयों के साथ काम करना था और अपना ज़्यादातर समय वहाँ के शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ बिताना था। हमें गतिविधियाँ/खेल करवाने का प्रयास व उनका परीक्षण करना था। यह भी सुनिश्चित करना था कि शिक्षक भी इन माध्यमों द्वारा बच्चों से अनौपचारिक रूप से जुड़ें। शिक्षकों को सीखना था कि शिक्षार्थियों के साथ गतिविधियों के माध्यम से काम करने और अन्त:क्रिया करने पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और प्रभावी हो सकती है। हमें उम्मीद थी कि मेले के अन्त तक यह सफ़र और अन्त:क्रिया व सीखने का यह अनुभव शिक्षकों व शिक्षार्थियों दोनों के लिए एक मिसाल क़ायम करेगा।

सहकर्मियों के बीच प्रतिद्वन्द्विता को 'कार्यस्थल प्रतिस्पर्धा' के रूप में देखना आम बात है। अगर थोड़े हल्के-फुल्के अन्दाज़ में देखें तो इसके कारण अक्सर समूह बनते हैं, जिनमें कुछ गपशप और हँसी-मज़ाक़ होता है। मुझे विद्यालय में आए दो ही दिन हुए थे जब मैंने देखा कि लंच के समय शिक्षक अपना-अपना लंच का डिब्बा लेकर दो समूहों में बँटकर अलग-अलग कमरों में चले गए। मैं उलझन में पड़ गई कि मैं किस समूह के साथ बैठूँ या अकेले ही बैठूँ। हैड मिस्ट्रेस ने मेरी उलझन देखी और मुझे अपने समूह (आइए हम इस समूह को *हैरी* कहते हैं) के साथ बैठने के लिए आमंत्रित किया। हमारे बीच बेंगलूरु के भोजन, संस्कृति और ट्रैफ़िक के बारे में अच्छी बातचीत हुई।

कुछ दिन बीत गए। मैं सभी शिक्षकों के साथ अच्छा तालमेल बना रही थी। तभी एक दिन दूसरे समूह (आइए इस दूसरे समूह को हम *पॉटर* कहते हैं) के एक शिक्षक ने मुझे उनके साथ लंच करने के लिए कहा। मैंने उत्साहपूर्वक यह प्रस्ताव स्वीकार किया और कुछ दिन उनके साथ लंच किया। मैंने पूरे समय दोनों समूहों के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखा। यहाँ तक कि बीस दिनों तक दोनों समूहों के साथ लंच साझा करने के बाद भी मैंने इन दोनों समूहों में एक-दूसरे के बारे में कोई गपशप या बातचीत नहीं सुनी। मैंने यह भी देखा कि दोनों समूह एक-दूसरे के साथ अच्छे-से रहते और बाक़ी समय में एक-दूसरे के साथ हँसी-मज़ाक़ करते, शिक्षण-योजनाएँ और बच्चों के क़िस्से साझा करते थे।

फिर एक दोपहर जब मैं लंच के लिए *हैरी* समूह के साथ बैठी थी, हैड कुक, हैड मिस्ट्रेस के पास आए और बोले कि आज विद्यालय की रसोई में तैयार साँभर और ब्रर्फी बहुत स्वादिष्ट बनी है, तो क्या आप लोग कुछ लेना पसन्द करेंगे। हैड मिस्ट्रेस ने हैड कुक को कहा कि किसी विद्यार्थी के हाथों यह दोनों चीज़ें भिजवा दें। हैड कुक ने हामी भरी और चले गए। कुछ मिनटों बाद अचानक से एक शिक्षक ने दरवाज़े के क़रीब बैठे दूसरे शिक्षक को यह देखने को कहा कि कौन-सा विद्यार्थी भोजन लेकर आ रहा है और फिर धीरे-से बोले कि हैड कुक 'किसी को भी' कमरे के अन्दर भेज देंगे। अब तक मैंने उनकी बोली थोड़ी-थोड़ी सीख ली थी और किसी तरह यह समझ गई थी कि 'किसी को भी' से शिक्षक का क्या मतलब हो सकता है। इस बीच दरवाज़े के पास बैठी शिक्षक उठकर बाहर भागी यह देखने कि कौन-सा विद्यार्थी खाना ला रहा है। फिर वह अपने साथ एक लड़की को लेकर आई और उससे सभी के लिए खाना परोसवाया। सभी ने भोजन का आनन्द लिया।

इस पूरे प्रकरण ने मुझे एक अजीब-सी उत्सुकता से भर दिया। रोज़ शाम को सभी फेलो शहर वापिस जाने के लिए बस स्टॉप पर मिलते थे। उनमें से एक फेलो (जो वहाँ का निवासी था) से मैंने लंच के समय की घटना के बारे में पूछा, "जब उन शिक्षक ने 'किसी को भी' कहा था तब क्या उनका मतलब जाति से था?" मेरे सहकर्मी ने जवाब दिया, "हाँ। क्या तुम्हें यह बात पहले दिन ही पता नहीं चल गई थी? तुम्हें क्या लगता है शिक्षकों के दो समूह क्यों हैं!" यह सुनकर मैं भौंचक्की रह गई। मैंने अब तक हुई घटनाओं को जोड़कर देखना शुरू किया और मुझे समझ आया कि शिक्षकों के समूह का कार्यस्थल की प्रतिस्पर्धा से कोई लेना-देना नहीं था। यह लोगों के दो वर्गों के बीच भोजन साझा नहीं करने के सामाजिक मानदण्डों पर आधारित एक स्पष्ट विभेद था। मैं शिक्षकों के कार्यकलापों को लेकर कुछ राय नहीं बना सकती क्योंकि हमारा समाज इसी तरह का है और हम सभी को इसके द्वारा तय मानदण्डों का पालन करना पड़ता है।

हमारे आस-पास नागरिकता के बारे में बहुत ज़्यादा बातचीत

या सोच-विचार नहीं होता है। हम इसे अपनी सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में पढ़ते हैं। शायद हम 'नागरिकों के अधिकार' जैसे शब्द पहली बार तब सुनते हैं जब वोट डालने के बाद अपने अभिभावकों की उँगलियों पर गहरे नीले रंग की स्याही का निशान लगा देखते हैं। चुनाव के सन्दर्भ को छोड़ दिया जाए तो इसके अलावा हम 'नागरिक' शब्द सुनते ही कब हैं? नागरिकता क्या होती है? हम वही हैं जो हमारा समाज है। यह उतना ही सरल है जितना कि सामाजिक मानदण्डों का अनुकरण और पालन करना। हमें अपने तात्कालिक समाज में ख़ुद को अच्छा नागरिक साबित करने की ज़रूरत है, न कि राजधानी में या अपने देश की किसी सीमा पर।

जैसा कि इस घटना से स्पष्ट है शिक्षक भी उन्हीं सामाजिक मानदण्डों का पालन कर रहे होंगे, जिनमें उनका जन्म और पालन-पोषण हुआ है। उन्होंने सीखा है कि समाज इसी तरह से काम करता है और उन्हें इन नियमों का पालन करने की ज़रूरत है। इस विद्यालय में हर रोज़ दिन में दो बार राष्ट्रगान गाया जाता था— एक बार सुबह की सभा में और फिर एक बार दिन के अन्त में। हैड मिस्ट्रेस इस बात के लिए इतनी सख़्त थी कि विद्यालय का समय ख़त्म होने पर विद्यालय के गेट बन्द करवा देतीं ताकि कोई भी विद्यार्थी राष्ट्रगान गाए जाने से पहले बाहर न निकल सके। दो बार राष्ट्रगान गाने का एकमात्र कारण नागरिकता की भावना को जगाना था। हालाँकि जहाँ तक विद्यार्थियों की बात है ऐसा हो सकता है कि वे सिखाई गई हर चीज़ को नहीं सीख पाएँ, लेकिन वह अपने शिक्षकों के कार्यों और उनके व्यवहार का अनुकरण ज़रूर करते हैं। जाने-अनजाने में हम उस विद्यालय की संस्कृति को भी अपना लेते हैं जिसमें हम पढ़ते हैं ।

विजयाश्री पी एस कर्नाटक के कलबुर्गी ज़िला संस्थान, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में स्रोत व्यक्ति हैं। उनसे vijayashree.ps@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी

सामाजिक-वैज्ञानिक मुद्दों पर ध्यान देने के अवसर प्रदान करने से पहले अगर विज्ञान के शिक्षक इस बात को बारीकी से देखें कि वे कक्षा में कुछ बुनियादी लोकतांत्रिक तरीकों को कैसे लागू कर सकते हैं (उदाहरण के लिए, पर्यावरण में उपलब्ध सामान्य संसाधनों का उपयोग) तो उन्हें काफ़ी मदद मिलेगी। यह विज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता हो सकती है, विशेष रूप से प्रयोगशाला के काम के दौरान - अर्थात यह समझना कि प्रयोगशाला नियमित कक्षा की तरह सभी के लिए सामान्य है, इस स्थान का सम्मान करना चाहिए और ज़िम्मेदारी की भावना के साथ उपकरणों को काम में लाना चाहिए।

- चन्द्रिका मुरलीधर, विज्ञान की कक्षा में लोकतंत्र, पेज 33